MY PR CLASSES

MY PR CLASSES

one step to success

classes for cgpsc & cgvyapm

CGPSC

CGVYAPM

वाकाटक वंश

सम्पूर्ण इतिहास

वाकाटक वंश

वाकाटक वंश

राजधानी ---नंदिवर्धन(नागपुर)

संस्थापक --विंध्यशक्ति (255 ई.)

शासनकाल--तीसरी सदी के मध्य से छठी सदी तक

वाकाटक वंश

शासन क्षेत्र---बरार,आन्ध्र प्रदेश,मध्यप्रदेश का बघेल खंड पठार,छत्तीसगढ़ का दक्षिण क्षेत्र ।

वायुपुराण एवं अजंता लेख के अनुसार विंध्यशक्ति वाकाटक वंश का संस्थापक राजा थे।

प्रथम राजा विंध्यशक्ति के लिए अजंता लेख में "वाकाटक वंशकेतु:" वाक्य का प्रयोग किया गया है।

इस वंश का नाम वाकाटक क्यों रखा गया इसका स्पष्ट प्रमाण नहीं है ।

पृथ्वीसेन द्वितीय को "वाकाटक वंश के खोये हुए भाग्य का निर्माता कहा जाता है।

वाकाटक वंश

छत्तीसगढ़ में शासन करने वाले प्रमुख वाकाटक नरेश निम्न है----

1.प्रवरसेन प्रथम-- विंध्यशक्ति के पुत्र प्रवसेन प्रतापी राजा हुआ जिसने नागपुर से दक्षिण कोसल तक अपना शासन स्थापित किया। प्रमाण स्वरूप दुर्ग से प्राप्त अपूर्ण ताम्रपत्र में उल्लेखित।K

2.महेंद्र सेन-- हरिषेण कृत प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख के अनुसार दक्षिण भारत अभियान के दौरान समुद्र गुप्त ने दक्षिण कोसल नरेश महेंद्र सेन को पराजित किया था।

3.रुद्रसेन -द्वितीय--- चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती से विवाह किया । रुद्रसेन द्वितीय की अकाल मृत्यु हो जाने के कारण चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री के शासन में पूर्ण सहयोग किया था।

वाकाटक वंश

4.प्रवरसेन द्वितीय---वाकाटक वंश के प्रतापी शासक।

प्रवरपुर नगर की स्थापना की इसे अपना राजधानी बनाया।

'सेतुबंध' ग्रंथ की रचना की थी।इसे रावणवहो ग्रंथ भी कहा जाता है। प्रवरसेन वैष्णव धर्म का अनुयायी था।

इसके दरबार में महाकवि कालिदास रहते थे।

कालिदास ने मेघदूत काव्य की रचना सरगुजा के रामगढ़ की पहाड़ी में की थी।

पंडित मुकुटधर पांडे ने मेघदूत का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद किया है ।

5.नरेंद्रसेन--- नलशासक भवदत्त वर्मन ने नरेंद्रसेन को पराजित किया(ऋद्धिपुर ताम्रपत्र में उल्लेख)

6.पृथ्वीसेन द्वितीय--- केसरीबेड़ा अभिलेख के अनुसार राजा पृथ्वीसेन ने नलशासक अर्थपति भट्टारक को पराजित किया। इस युद्ध में अर्थपति भट्टारक की मृत्यु हो गई। इसने अपनी राजधानी पदमपुर को बनाया था। वाकाटक वंश के मुख्य वंश का

वाकाटक वंश

4.प्रवरसेन द्वितीय---वाकाटक वंश के प्रतापी शासक।

प्रवरपुर नगर की स्थापना की इसे अपना राजधानी बनाया।

'सेतुबंध' ग्रंथ की रचना की थी।इसे रावणवहो ग्रंथ भी कहा जाता है। प्रवरसेन वैष्णव धर्म का अनुयायी था।

इसके दरबार में महाकवि कालिदास रहते थे।

कालिदास ने मेघदूत काव्य की रचना सरगुजा के रामगढ़ की पहाड़ी में की थी।

पंडित मुकुटधर पांडे ने मेघदूत का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद किया है ।

5.नरेंद्रसेन--- नलशासक भवदत्त वर्मन ने नरेंद्रसेन को पराजित किया(ऋद्धिपुर ताम्रपत्र में उल्लेख)

6.पृथ्वीसेन द्वितीय--- केसरीबेड़ा अभिलेख के अनुसार राजा पृथ्वीसेन ने नलशासक अर्थपति भट्टारक को पराजित किया। इस युद्ध में अर्थपति भट्टारक की मृत्यु हो गई। इसने अपनी राजधानी पदमपुर को बनाया था। वाकाटक वंश के मुख्य वंश का

वाकाटक वंश

7.हरिषेण-- कालांतर में वाकाटकों के वत्सगुल्म शाखा के राजा हरिषेण ने दक्षिण कोसल में अधिकार कर लिया ।

वत्सगुल्म शाखा का संस्थापक सर्वसेन प्रवरसेन का पुत्र था।

विशेष तथ्य---★वाकाटक वंश के शासकों का युद्ध प्राय: बस्तर/कोरापुट के नलशासकों के साथ होता रहता था ।

★ गुप्तों के साथ वाकाटक वंश के शासकों का वैवाहिक संबंध थे इससे ज्ञात होता है कि वाकाटक गुप्तों की अधीनता स्वीकार करते थे क्योंकि बहुत से अभिलेखों में वाकाटक स्वयं को राजा तथा गुप्तों को महाराजधिराज संबोधित करते थे।

छत्तीसगढ़ में वाकाटक वंश के प्रमाण--

सिक्का--- मोहला(दुर्ग)

ताम्रपत्र-- राजिम(गरियाबंद) ,अड़भार(जांजगीर-चांपा),

मोहला(दुर्ग) --प्रवरसेन का ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है।